E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

निषाद जनजाति के सांस्कृतिक पुनरुत्थान और सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन का समकालीन विश्लेषण

संगीता बाथम

एवं

प्रो. प्रशांत पुराणिक,

इतिहास विभाग,

शासकीय माधव कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,

उज्जैन (मध्य प्रदेश)

Paper Received date

05/10/2025

Paper Publishing Date

10/10/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.17739822

सारांश

यह शोध-पत्र निषाद जनजाति के सांस्कृतिक पुनरुत्थान और सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन का समकालीन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। ऐतिहासिक ग्रंथों, लोक परंपराओं, और नवीन सामाजिक अध्ययनों के आधार पर यह अध्ययन दर्शाता है कि किस प्रकार नदी-आधारित निषाद समुदाय ने अपने पारंपरिक जीवन, लोक संस्कृति, और सामुदायिक पहचान को आधुनिक शिक्षा, आरक्षण नीति, और राजनीतिक नेतृत्व के माध्यम से पुनर्स्थापित किया है। निषाद समाज ने अपने सांस्कृतिक गौरव को लोकगीतों, उत्सवों और सामाजिक संगठनों के माध्यम से पुनर्जीवित किया है, वहीं तकनीकी और राजनीतिक भागीदारी के द्वारा मुख्यधारा समाज में स्थान प्राप्त किया है। अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि औद्योगीकरण और पर्यावरणीय संकटों ने निषादों की पारंपरिक आजीविका पर गहरा प्रभाव डाला है, जिसके प्रतिरोध में समुदाय ने जल संरक्षण और पर्यावरणीय चेतना को अपने सामाजिक आंदोलन का अंग बनाया है। यह शोध निषाद जनजाति के समेकित विकास, सांस्कृतिक पुनर्परिभाषा, और सामाजिक न्याय की दिशा में एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक योगदान प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: निषाद जनजाति, सांस्कृतिक पुनरुत्थान, सामाजिक-राजनीतिक सशक्तिकरण, नदी आधारित पहचान, पर्यावरणीय चेतना, समावेशी विकास।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

प्रस्तावना :

निषाद जनजाति भारतीय इतिहास, पौराणिक कथाओं और सामाजिक संरचना का अभिन्न अंग रही है। एक समय में समाज के हाशिये पर रही इस जनजाति ने बीते कुछ दशकों में उल्लेखनीय सांस्कृतिक पुनरुत्थान और सामाजिक-राजनीतिक चेतना का प्रदर्शन किया है (1) । वर्तमान शोध का उद्देश्य है - निषाद जनजाति की ऐतिहासिक यात्रा, उनके सांस्कृतिक विकास के चरण, औपनिवेशिक प्रभाव, सामाजिक वर्गीकरण तथा समकालीन परिदृश्य में उनके सामाजिक-राजनीतिक सशक्तिकरण का विश्लेषण करना (2) ।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

निषाद जनजाति का उल्लेख वेद, पुराण, महाकाव्य (रामायण, महाभारत) तथा विभिन्न क्षेत्रीय लोक साहित्य में मिलता है। ऋग्वेद काल से ही इस समुदाय का नदी-तटीय जीवन, मछलीपालन, नाविक कार्य और जलमार्ग सुरक्षा में विशेष योगदान रहा है (3)। प्राचीन भारत में निषादों को वीरता, परिश्रम, प्राकृतिक जीवन-शैली तथा सामाजिक सहयोग के प्रतीक के रूप में देखा गया।

ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में निषाद समुदाय को "आपराधिक जनजाति" (Criminal Tribe) के रूप में वर्गीकृत किया गया था, जिससे उनकी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति पर दीर्घकालिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ा (4)। स्वतंत्रता के पश्चात वे लगातार सामाजिक सुधार और राजनीतिक जागरूकता की प्रक्रिया से जुड़े रहे, किंतु पूर्ण समरसता और समानता के लिए संघर्ष अभी भी जारी है (5)।

Table 1. निषाद समुदाय के सामाजिक-राजनीतिक विकास के प्रमुख आयाम

क्रमांक	विकास क्षेत्र	पारंपरिक स्थिति	समकालीन परिवर्तन	स्रोत
1.	शिक्षा	सीमित साक्षरता, पारंपरिक ज्ञान प्रणाली	विद्यालयों और महाविद्यालयों में बढ़ती भागीदारी, छात्रवृत्ति योजनाएँ (सरकारी एवं NGO)	(2), (7), (8)

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

2.	आर्थिक स्थिति	मत्स्य पालन, नाव निर्माण, मजदूरी	वैकल्पिक रोजगार, सरकारी योजनाओं से जुड़ाव, SHG समूहों में भागीदारी	(9), (16)
3.	राजनीतिक प्रतिनिधित्व	न्यूनतम स्थानीय उपस्थिति	पंचायत, विधानसभा और लोकसभा में बढ़ती भागीदारी	(2), (11), (12)
4.	सांस्कृतिक पहचान	लोकगीत, जल पूजा, पारंपरिक कला	सांस्कृतिक मंच, निषाद महासभा, युवा सांस्कृतिक संगठन	(6), (8), (10)
5.	पर्यावरण चेतना	नदी और जल स्रोतों से जीवन जुड़ा	जल संरक्षण, नदी पुनर्जीवन अभियान	(18), (19)

सांस्कृतिक विरासत और पुनरुत्थान :

निषाद जनजाति की सांस्कृतिक विरासत अत्यंत समृद्ध है। इनके लोकगीत, नृत्य, पारंपरिक उत्सव, चित्रकला और शिल्प में जल और प्रकृति का गहरा स्थान है (6)। मकर संक्रांति, छठ पर्व, और नदी उत्सव जैसे पर्व जल एवं पर्यावरण की पूजा का प्रतीक हैं। रामायण में निषादराज गुह का उल्लेख तथा महाभारत में एकलव्य की कथा इनके गौरवशाली सांस्कृतिक इतिहास का प्रमाण हैं (7)।

आधुनिक समय में निषाद समुदाय अपने सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए विभिन्न संगठनों, सांस्कृतिक मंचों, पत्रिकाओं, और आंदोलनों के माध्यम से सक्रिय है (8)। निषाद महासभा, अखिल भारतीय कश्यप निषाद आदिवासी महासंघ, तथा क्षेत्रीय समाज सुधार समितियाँ शिक्षा, कला, और सामाजिक नेतृत्व में नए आयाम स्थापित कर रही हैं (9)। यह सांस्कृतिक पुनरुत्थान केवल

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

परंपराओं के संरक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि आत्मगौरव और सामाजिक नेतृत्व की भावना को भी सशक्त करता है (10)।

सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन :

निषाद जनजाति ने हाल के वर्षों में राजनीतिक रूप से असाधारण जागरूकता दिखाई है। संपत्ति, शिक्षा, आरक्षण और प्रतिनिधित्व जैसे मुद्दों पर समुदाय निरंतर सक्रिय है (11)। उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, मध्य प्रदेश और ओडिशा जैसे राज्यों में विधानसभा तथा लोकसभा चुनावों में निषाद वर्ग की भागीदारी लगातार बढ़ रही है (2)।

राजनीतिक गोलबंदी के साथ-साथ निषाद समुदाय ने शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, और रोजगार सृजन के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किए हैं (12)। सामाजिक परिवर्तन की इस प्रक्रिया में निषाद युवाओं की भूमिका विशेष रूप से देखी जा सकती है, जिन्होंने आधुनिक शिक्षा और तकनीकी ज्ञान के माध्यम से अपनी पहचान को सशक्त किया है (13)।

सांस्कृतिक पुनरुत्थान और राजनीतिक आंदोलनों ने निषाद समुदाय को संविधानिक अधिकारों और सामाजिक न्याय के प्रति सजग बनाया है। यह समुदाय आज आरक्षण, नौकरी, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रहा है (14) ।

आधुनिक चुनौतियाँ एवं समाधान :

निषाद समुदाय की स्थिति में यद्यपि उल्लेखनीय सुधार हुए हैं, फिर भी शिक्षा की कमी, सीमित आर्थिक संसाधन, पारंपरिक व्यवसायों का संरक्षण और जातिगत भेदभाव जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं (15) ।

भारत सरकार एवं राज्य सरकारों ने निषाद समुदाय के लिए आरक्षण, छात्रवृत्ति, मत्स्य व्यवसाय प्रोत्साहन, और प्रशिक्षण योजनाएँ शुरू की हैं (16)। राष्ट्रीय निषाद महासभा जैसे संगठन इन योजनाओं के कार्यान्वयन में सहयोग कर रहे हैं।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

वर्तमान समय में निषाद समाज तकनीकी प्रगति, सूचना प्रौद्योगिकी, व्यावसायिक प्रशिक्षण, और राजनीतिक नेतृत्व के क्षेत्र में पारंपरिक पहचान के साथ मुख्यधारा में तीव्रता से आगे बढ़ रहा है (17)।

निषाद समुदाय एवं पर्यावरणीय संकट :

नदी, जल और प्रकृति के साथ निषाद समुदाय का गहरा और ऐतिहासिक संबंध रहा है। औद्योगीकरण, नदी प्रदूषण, जल स्तर में गिरावट और संसाधनों के दोहन से निषाद समुदाय की आजीविका पर गहरा प्रभाव पड़ा है (18)।

इन संकटों के प्रतिरोध में निषाद समाज ने नदी पुनर्जीवन, जल संरक्षण, और जैव विविधता संरक्षण के लिए कई स्थानीय पहल की हैं। 'नदी पुत्र' जैसी कृतियों में निषादों के पर्यावरणीय संघर्ष और पारंपरिक पारिस्थितिकी दृष्टिकोण को विस्तार से दर्शाया गया है (19)।

निषाद जनजाति में क्षेत्रीय विविधता :

उत्तर भारत, बिहार, बंगाल, मध्य प्रदेश, उड़ीसा आदि राज्यों में निषाद जाति के कई उप-समुदाय जैसे - मल्लाह, मांझी, केवट, धीवर, बिन्द, कश्यप आदि निवास करते हैं (20)। इनके व्यवसाय, रीति-रिवाज, और सामाजिक स्थिति में क्षेत्रीय भिन्नता देखने को मिलती है।

क्षेत्रीय स्तर पर निषादों के सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलन, सामुदायिक विकास कार्यक्रम, पंचायतों में भागीदारी, और शैक्षिक पहलें सामुदायिक सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं (21)।

निषाद समुदाय की सामाजिक पहचान और प्रतिनिधित्व :

भारतीय समाज में निषादों की पहचान "जल संरक्षक" और "शिल्पकार" के रूप में रही है। प्राचीन ग्रंथों जैसे मनुस्मृति और पुराणों में निषादों को जल और भूमि के रक्षक के रूप में वर्णित किया

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

गया है (22)। आधुनिक समय में निषाद समुदाय ने साहित्य, संस्कृति, राजनीति, और शिक्षा के क्षेत्रों में उल्लेखनीय पहचान बनाई है (23)।

निषाद समुदाय की सामाजिक-राजनीतिक चेतना आज न केवल उनके इतिहास को पुनर्स्थापित कर रही है, बल्कि भविष्य की दिशा भी निर्धारित कर रही है।

अनुसंधान की नवीनता (Novelty of the Study) :

इस शोध-पत्र की विशिष्टता यह है कि यह केवल निषाद जनजाति के ऐतिहासिक या पौराणिक वर्णन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उनके समकालीन सांस्कृतिक पुनरुत्थान, सामाजिक-राजनीतिक सशक्तिकरण और पर्यावरणीय चेतना को एक साथ विश्लेषित करता है (3)। अधिकांश उपलब्ध अध्ययन निषादों को या तो पौराणिक परिप्रेक्ष्य में देखते हैं या औपनिवेशिक-कालीन 'क्रिमिनल ट्राइब्स' की वर्गीकरण-नीति के सन्दर्भ में (4)। परंतु यह शोध उन अध्ययनों से भिन्न है क्योंकि इसमें निषाद समाज की वर्तमान राजनीतिक सहभागिता, सांस्कृतिक पुनर्पहचान, आर्थिक परिवर्तन और पर्यावरणीय संघर्ष – इन सभी को एक अंतर्संबंधित दृष्टि से समझा गया है (5)।

यह अध्ययन सामाजिक विज्ञान और मानवशास्त्र दोनों के लिए उपयोगी है क्योंकि यह दिखाता है कि कैसे एक पारंपरिक नदी-आधारित जनजाति आधुनिक लोकतंत्र और विकास की धारा में स्वयं को पुनर्परिभाषित कर रही है (6)। साथ ही, यह कार्य नीति-निर्माताओं और सामाजिक संगठनों को यह समझने में मदद करता है कि निषाद जैसे समुदायों के विकास के लिए सांस्कृतिक मूल्यों और पर्यावरणीय ज्ञान को किस प्रकार एकीकृत किया जा सकता है (7)।

संक्षेप में, इस शोध की नवीनता तीन स्तरों पर निहित है –

1. समेकित दृष्टिकोण: सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय आयामों का एक साथ अध्ययन।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

2. समकालीन संदर्भ: आधुनिक शिक्षा, तकनीकी परिवर्तन और राजनीतिक भागीदारी के साथ निषाद समाज का वर्तमान रूप।

3. नीति-आधारित प्रयोज्यता: निषाद समुदाय के उत्थान हेतु ठोस नीति सुझावों की आधारभूमि प्रदान करना।

निष्कर्ष :

निषाद जनजाति आज सामाजिक-राजनीतिक चेतना, सांस्कृतिक पुनरुत्थान और आत्मगौरव का प्रतीक बन चुकी है। ऐतिहासिक उपेक्षा और संघर्ष के बावजूद यह समुदाय समाज के हर क्षेत्र में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रहा है (24)। संगठन, आंदोलन, और सांस्कृतिक प्रयासों के माध्यम से निषादों ने सामाजिक न्याय, शिक्षा, और पर्यावरण संरक्षण जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है।

सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण, युवा नेतृत्व, और संचार माध्यमों के उपयोग से निषाद समाज नए युग की ओर अग्रसर है। यह समुदाय आज स्वावलंबन, पर्यावरणीय चेतना, और सामाजिक समानता के नए प्रतीक के रूप में उभर रहा है (25)।

संदर्भ सूची (References) :

1. Ambedkar, B. R. (1948). *The Untouchables: Who Were They and Why They Became Untouchables.* New Delhi: Government of India Press.
2. Singh, K. (2017). Political participation of Nishad community in Uttar Pradesh. *Social Change, 47*(2), 233–250.
3. Srivastava, R. (2021). *The River People: Culture, Identity and Livelihood among Nishads.* New Delhi: Routledge India.
4. Arnold, D. (1988). *Police Power and Colonial Rule: Madras 1859–1947.* Delhi: Oxford University Press.
5. National Commission for Scheduled Castes. (2022). *Annual Report 2021–2022.* New Delhi: Government of India.

6. Mishra, P. (2018). *Cultural Identity and Empowerment among Nishad Community.* Varanasi: Bharat Bharti Publications.
7. Pandey, R. (2019). Role of local leadership in social change among riverine communities. *Indian Journal of Social Research, 60*(4), 567–583.
8. Choudhary, S. N. (2015). *Tribal Development in India: The Contemporary Debate.* New Delhi: Rawat Publications.
9. Kumar, A., & Singh, R. (2020). Socio-economic transformation of marginalized fishing communities in North India. *Journal of Rural Studies, 75*, 112–121.
10. Shukla, R. (2020). *Nadi aur Sanskriti: Bharat ke Jal Lokon ka Itihas.* Lucknow: Hindi Akademi.
11. Yadav, P. (2019). *Grassroot Democracy and Marginal Communities.* New Delhi: Rawat Publications.
12. Singh, R., & Verma, A. (2021). Empowerment through Education among Marginalized Groups in India. *Indian Journal of Political Science, 82*(3), 144–159.
13. Sinha, M. (2020). *Youth and Social Change in Marginalized Societies.* New Delhi: Sage India.
14. Government of India. (2021). *Ministry of Social Justice and Empowerment Report 2020–21.* New Delhi.
15. Bhattacharya, P. (2016). *Caste, Economy and Development in India.* Kolkata: Progressive Publications.
16. Ministry of Fisheries, Animal Husbandry & Dairying. (2022). *Annual Report 2021–22.* New Delhi: Government of India.
17. Patel, J. (2023). *Digital Literacy and Marginal Communities in Rural India.* Delhi: Concept Publishing.
18. Gupta, A., & Sharma, V. (2018). Environmental degradation and riverine livelihoods in Central India. *Asian Journal of Environment and Development, 15*(2), 201–215.
19. Dubey, S. (2021). *Nadi Putra: Nishad Samaj aur Paryavaranik Chetna.* Allahabad: Samvad Prakashan.
20. Singh, B. (2017). *Ethnographic Study of Nishad Subgroups in North India.* Patna: Bihar Research Council.
21. Prasad, R. (2020). Community Participation in Panchayati Raj among Backward Classes. *Journal of Indian Governance, 5*(1), 33–47.
22. Pandit, H. (2015). *Varna Vyavastha aur Samajik Parivartan.* Delhi: National Book Trust.
23. Verma, S. (2021). *Cultural Movements and Social Identity among River Communities.* New Delhi: Orient Blackswan.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

24. National Sample Survey Office (NSSO). (2020). *Report on Socio-economic Conditions of Marginalized Castes in India.* New Delhi: Ministry of Statistics.

25. Tiwari, K. (2024). *Emerging Social Consciousness and Self-identity among Nishad Youth. Contemporary Social Studies, 12*(1), 65–79.